Sanskrita Se Dara Kyom?

संस्कृत से डर क्यों?

Document Information

Text title : Sanskrita Se Dara Kyom?

File name : sanskRRitaseDarakyoM.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

Sanskrita Se Dara Kyom?

संस्कृत से डर क्यों?

संस्कृत को कुछ कठिन समझकर जो पढ़ने से डरते हैं,
वे फिर और कौन-सा भारी कठिन काम कर सकते हैं ?
फिर संस्कृत तो बहुत सरल है इसे कठिन बतलाना,
अपनी नासमझी है भारी या यह एक बहाना । १
जब यूरोप-निवासी संस्कृत के पण्डित हो जाते,
संस्कृत में पढ़ते-लिखते हैं, कविता भी कर पाते,
काबुल, कन्धाहार, अरब को जब संस्कृत आ जाती,
रूस कनाडा को जब संस्कृत कभी नहीं डेरवाती- । २
तो भारतवासी होकर फिर आप भला क्यों डरते ?
क्यों कठिनाई का कलंक हैं इसके शिर पर मढ़ते ?
नहीं कठिन यह, बहुत सरल है, बहुत शीघ्र है आती,
प्रेमी जन को देख दौड़कर आ जाती मुसकाती । ३
संस्कृत के जब शब्द हजारों प्रतिदिन बोले जाते,
अव्यय, संज्ञा, धातु, विशेषण सभी समझ में आते ।
तो भारतवासी को संस्कृत आने में क्या भय है,
बस-दो-तीन महीनों का ही काफी बहुत समय हैं । ४

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Se Dara Kyom?
pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*